आर्द्रभूमि संरक्षण के लिए राष्ट्रीय CEPA रणनीति

भारतीय भूभाग विविध आर्द्रभूमियों से भरा हुई है, जो न केवल अनेक पारिस्थितिक (इकोसिस्टम/ecosystem) सेवाएँ प्रदान करती हैं, बल्कि बहुत से जीव-जंतु और वनस्पति का भी घर हैं। आर्द्रभूमि का संरक्षण सुनिश्चित करने के लिए जनभागीदारी आवश्यक है। प्राचीन काल से ही आर्द्रभूमि का प्रबंधन एक सामुदायिक संसाधन के रूप में किया जाता रहा है और इसमें स्थानीय लोग सक्रिय भूमिका निभाते रहे हैं। आज, यह विश्व स्तर पर स्वीकार्य है कि आर्द्रभूमि प्रबंधन के लिए एक समावेशी और सहभागी रणनीति, इन इकोसिस्टम को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण है। रामसर कन्वेंशन अथवा उनकी CEPA पहल, आर्द्रभूमि के संरक्षण के लिए नागरिकों के साथ कार्यनीतिक संचार और जुड़ाव को बढ़ावा देती है।

आर्द्रभूमि के पास रहने वाले स्थानीय नागरिक एवं समुदाय, जो कि इनसे मिलने वाली सेवाओं पर निर्भर हैं, इन क्षेत्रों से विशिष्ट संबंध रखते हैं। ये समुदाय आर्द्रभूमि पर जल, भोजन, चारा, ईंधन आदि के लिए निर्भर हैं और सही मायने में इन क्षेत्रों की संगति में रहते हैं। प्राकृतिक संसाधनों और स्थानीय पारिस्थितिकी का परंपरागत ज्ञान और अनुभव इन समुदायों को आर्द्रभूमियों के सतत प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका प्रदान करता है। परिणामस्वरूप, स्थानीय नागरिक आर्द्रभूमि की बहाली में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं और समुदाय-आधारित संरक्षण की पहल कर सकते हैं, जिससे आर्द्रभूमि का विवेकपूर्ण उपयोग हो सके।

आर्द्रभूमि पारिस्थितिक और आर्थिक ढाँचे का अमूल्य हिस्सा हैं। ये इकोसिस्टम लाखों लोगों को आजीविका प्रदान करने के साथ-साथ जल संचय, शुद्धिकरण और बाढ़ नियंत्रण में भी मदद करते हैं। इसके बावजूद, देश में आर्द्रभूमि बढ़ते खतरों का सामना कर रही हैं। कृषि अपवाह, अतिक्रमण और अनुचित कचरा निपटान से होने वाला प्रदूषण आदि इन खतरों में शामिल हैं। खेतों से इन तंत्रों में प्रवाहित होने वाले कीटनाशक जलीय जीवन को नुकसान पहुँचाते हैं और पानी की गुणवत्ता को कम करते हैं। शहरीकरण के कारण आर्द्रभूमि क्षेत्र सिकुड़ रहे हैं और उनकी प्रभावी ढंग से कार्य करने की क्षमता कम हो गई है।

CEPA क्या है ?

CEPA संचार, शिक्षा, भागीदारी और जागरूकता के माध्यम से समुदायों को सशक्त बनाकर, आर्द्रभूमि का संरक्षण और प्रबंधन करने की एक पहल है। इसके निम्न उद्देश्य हैं:

स्थानीय समुदायों को आर्द्रभूमि संरक्षण में शामिल करना।

हितधारकों को पर्यावरण-अनुकूल क्रियाएँ अपनाने के लिए सक्षम बनाना।

लोगों को आर्द्रभूमि के महत्व के बारे में जानकारी देना।

आर्द्रभूमियों पर मँडराते खतरें कम करने के उपायों के प्रति जागरूकता बढ़ाना।

प्रकृतिः रक्षति रक्षिता
Nature Protects if She is Protected

SAVE WETLANDS CAMPAIGN

giz Deutsche Gesellschaft für Internationale Zusammenarbeit (GIZ) GmbH

Supported by:
Federal Ministry for the Environment, Nature Conservation, Nuclear Safety and Consumer Protection
based on a decision of the German Bundestag

IKI INTERNATIONAL CLIMATE INITIATIVE

इन चुनौतियों की गंभीरता को देखते हुए, आर्द्रभूमि संरक्षण के लिए CEPA रणनीति एक महत्त्वपूर्ण साधन है। इसके तहत सतत संरक्षण तभी संभव है जब हितधारकों, खासकर स्थानीय समुदाय को सशक्त बनाया जाए और इस प्रक्रिया में शामिल किया जाए। इन हितधारकों में किसान, मछुआरे, ग्राम पंचायतें, महिला समूह, सरकारी संस्थाएँ, गैर-सरकारी संगठन और व्यवसाय शामिल हैं, जिनकी गतिविधियाँ प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आर्द्रभूमि के स्वास्थ्य को प्रभावित करती हैं। इन हितधारकों को प्राथमिकता देने और सामूहिक जिम्मेदारी को बढ़ावा देने से संरक्षण के प्रयास समावेशी और प्रभावी बनते हैं।

CEPA के मुख्य पहलू

इस रणनीति के तीन मुख्य पहलू हैं, जो कि सतत संरक्षण प्रयासों के साथ संरेखित हैं। वे इस प्रकार हैं:

आर्द्रभूमि तंत्र

आवश्यक सेवाएँ प्रदान करता है और इसकी संधारणीयता में बाधा डालने वाले तनावों और खतरों का सामना करता है।

स्थानीय नागरिक व हितधारक समूह

व्यक्ति और समूह जो प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से आर्द्रभूमि से जुड़े हुए हैं।

नियम और दिशा-निर्देश

औपचारिक और अनौपचारिक दोनों, जो आर्द्रभूमि के संरक्षण और प्रबंधन से संबंधित हैं।

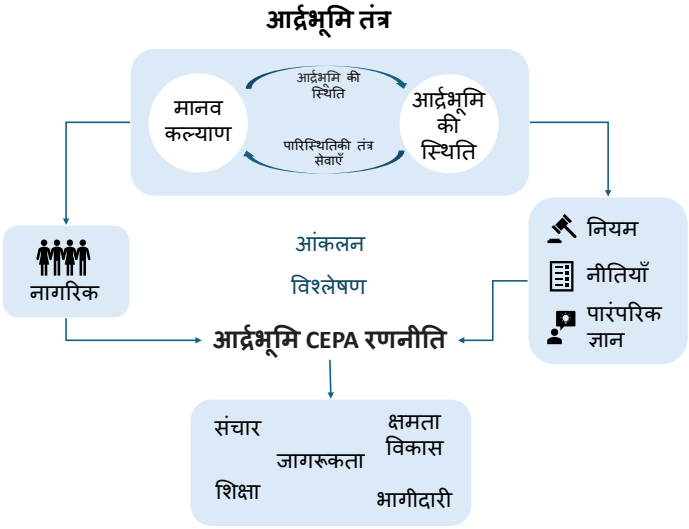

CEPA का मूलभूत उद्देश्य विविध संचार उपकरणों का उपयोग कर समाज के सभी वर्गों तक पहुँचना है। कार्यशालाएँ, मीडिया अभियान और सामुदायिक कार्यक्रम आर्द्रभूमि संरक्षण के बारे में जागरूकता फैलाने में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। लोक कला और नुक्कड़ नाटक जैसे पारंपरिक तरीके स्थानीय आबादी को जोड़ने में विशेष रूप से प्रभावी हैं, क्योंकि वे सांस्कृतिक संवेदनाओं के साथ गहराई से जुड़ते हैं। विभिन्न समूहों के लिए तैयार की गई शैक्षिक सामग्री उन्हें संधारणीय प्रथाओं और आर्द्रभूमि की प्रणालियों के महत्व के बारे में व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करती है।

आर्द्रभूमि संरक्षण में महिलाएँ एक प्रमुख भूमिका निभाती हैं। उनकी सामाजिक भूमिकाएँ उन्हें आर्द्रभूमि संसाधनों के साथ सीधे संपर्क में रखती हैं, जिससे उनकी भागीदारी अत्यंत अहम हो जाती है। CEPA रणनीति लैंगिक-समावेशिता को बढ़ावा देते हुए यह सुनिश्चित करती है कि निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में महिलाओं की आवाज़ सुनी जाए। क्षमता निर्माण के माध्यम से महिलाओं को नेतृत्व के अवसर मिलते हैं व न्यायसंगत और संरक्षण परिणामों को बढ़ावा मिलता है।

क्षमता निर्माण भी इस रणनीति का ज़रूरी अंग है। प्रशिक्षण कार्यक्रम स्थानीय समुदायों, किसानों और मछुआरों को आजीविका और आर्द्रभूमि के स्वास्थ्य के लिए लाभकारी संधारणीय प्रथाओं से परिचित कराते हैं। सहभागी निर्णय निर्माण को बढ़ावा देने से विभिन्न हितधारकों के बीच सहयोग बढ़ता है, जिससे व्यापक और व्यवहारिक समाधान ढूँढे जा सकते हैं।

CEPA की मुख्य गतिविधियाँ

CEPA रणनीति का मूल उद्देश्य संचार, शिक्षा और भागीदारी के माध्यम से आर्द्रभूमि संरक्षण की संस्कृति को बढ़ावा देना है। कुछ प्राथमिक हितधारक समूहों के लिए मुख्य गतिविधियाँ इस प्रकार हैं:

किसान

किसानों को सतत कृषि प्रथाएँ, जैसे जैविक खेती, वर्षा जल संचयन, और जैविक खाद के उपयोग के बारे में शिक्षा दी जाएगी। नियमित कार्यशालाएँ, स्थानीय संदेश, और मीडिया अभियानों के माध्यम से यह जानकारी फैलाई जाएगी कि कैसे आद्र क्षेत्रों के अनुकूल कृषि प्रथाएँ इकोसिस्टम की मदद करती हैं और फसल की उपज को बेहतर बनाती हैं।

मछुआरी समुदाय

मछुआरों को पर्यावरण आधारित मछली पालन, रासायनिक सामग्री के कम उपयोग, और पर्यावरणीय दृष्टि से अनुकूल मछली पकड़ने की तकनीकों पर प्रशिक्षण दिया जाएगा। अन्य मछुआरी समुदायों और संरक्षण संगठनों के सहयोग से सर्वोत्तम प्रथाओं का आदान-प्रदान किया जाएगा।

स्थानीय समुदाय

नियमित बैठकें, जागरूकता अभियान और संरक्षण गतिविधियाँ, जैसे आर्द्रभूमि पुनर्स्थापना, कचरा प्रबंधन और वृक्षारोपण के माध्यम से स्थानीय समुदाय की भागीदारी को आर्द्रभूमि प्रबंधन में बढ़ावा दिया जाएगा। आर्द्रभूमि के स्वास्थ्य पर निगरानी रखने के लिए समुदाय-आधारित निगरानी प्रणालियाँ स्थापित की जाएँगी।

ग्राम पंचायत और स्थानीय अधिकारी

स्थानीय शासकीय संस्थाओं को आर्द्रभूमि संरक्षण को उनके विकास योजनाओं में शामिल करने और भूमि उपयोग, कचरा निपटान, और संसाधन प्रबंधन से संबंधित नियमों को लागू करने के लिए सशक्त किया जाएगा। पंचायतों को आर्द्रभूमि, संधारणीय प्रथाओं और पर्यावरणीय नीतियों के महत्व के बारे में प्रशिक्षण दिया जाएगा।

महिलाओं की भागीदारी

आर्द्रभूमि के संसाधन प्रबंधन में महिलाओं की भूमिका को पहचाना जाएगा और निर्णय लेने की प्रक्रिया में उनकी भागीदारी को प्रोत्साहित किया जाएगा। महिला समूह, जैसे स्वयं सहायता समूहों (SHGs), के लिए सतत कृषि प्रथाओं, कचरा प्रबंधन, और इको-टूरिज्म पर प्रशिक्षण कार्यक्रम बनाए जाएँगे।

विद्यालय/कॉलेज के शिक्षक और छात्र

विद्यालय आर्द्रभूमि प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँगे, जहाँ वे छात्रों को इन क्षेत्रों के पारिस्थितिक और आर्थिक महत्व के बारे में शिक्षा देंगे। विज्ञान पाठ्यक्रम, प्रकृति आधारित गतिविधियाँ, और क्षेत्रीय आर्द्रभूमि के भ्रमण के माध्यम से छात्र इन्हें गहराई से समझेंगे, जिससे वे अपने परिवारों और समुदायों में संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए प्रेरित होंगे।

इको विकास समिति

इको विकास समिति स्थानीय समुदायों, सरकारी संस्थाओं और संरक्षण संगठनों के बीच एक सेतु का काम करते हुए यह सुनिश्चित करेगी कि आर्द्रभूमि के इकोसिस्टम और वहाँ रहने वाले लोगों की आजीविका दोनों की रक्षा की जाए। यह समिति स्थानीय समुदायों को आर्द्रभूमि पुनर्स्थापना और प्रदूषण नियंत्रण जैसे कार्यों में शामिल करेगी और इको-टूरिज्म परियोजनाओं का समर्थन करेगी, जो समुदायों को नई आजीविका के अवसर देने के साथ-साथ संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाएगी।

CEPA रणनीति की सफलता, आर्द्रभूमि संरक्षण के प्रमुख हितधारकों की पहचान और प्राथमिकता पर निर्भर करती है। इनमें स्थानीय कृषक समुदाय, मछुआरे, ग्राम पंचायतें, सरकारी संस्थाएँ, गैर-सरकारी संगठन (NGO) और स्थानीय व्यवसाय शामिल हैं। यह रणनीति आर्द्रभूमि के स्वास्थ्य पर उनके प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रभाव के आधार पर हितधारकों को प्राथमिक और माध्यमिक समूहों में वर्गीकृत करती है। आर्द्रभूमि पतन या संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले हितधारकों को प्राथमिकता देकर, रणनीति लक्षित हस्तक्षेप सुनिश्चित करती है, जिससे सकारात्मक परिणाम मिलने की संभावना सबसे अधिक होती है।

CEPA के लाभ

CEPA यह सुनिश्चित करता है कि भावी पीढ़ियों के लिए आर्द्रभूमि का संरक्षण, वर्तमान के समाज को फायदा पहुँचाते हुए किया जाए। मुख्य लाभों में शामिल हैं:

जैव विविधता की रक्षा करना और पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखना।

स्थानीय समुदायों को स्थायी आजीविका प्रदान करना।

प्रदूषण और संसाधनों के अत्यधिक शोषण को कम करना।

समुदाय की जागरूकता और भागीदारी को बढ़ाना।

अंततः CEPA रणनीति केवल आर्द्रभूमि की रक्षा करने के बारे में नहीं है, बल्कि संरक्षण की संस्कृति को बढ़ावा देने के बारे में भी है। इसका उद्देश्य सभी हितधारकों के बीच जिम्मेदारी की भावना पैदा करना और यह सुनिश्चित करना है कि आर्द्रभूमि आने वाली पीढ़ियों के लिए अपनी सेवाएँ प्रदान करती रहें। आर्द्रभूमि केवल भूमि नहीं हैं; वे जीवन-रेखाएँ हैं, जो प्रकृति और मानव समाज दोनों को सँजोए रखती हैं। उन्हें संरक्षित करने के लिए पारंपरिक ज्ञान, आधुनिक प्रथाओं और समावेशी शासन को एकजुट कर एक प्रयास की आवश्यकता है। CEPA रणनीति समुदायों को सक्रिय रूप से शामिल करके, लैंगिक समानता को बढ़ावा देते हुए, संचार और शिक्षा का लाभ उठाकर, देश को आर्द्रभूमि के संधारणीय प्रबंधन के लिए मार्गदर्शन प्रदान करती है।

About the publication: This publication is developed under the Wetlands Management for Biodiversity and Climate Protection project, implemented by Deutsche Gesellschaft für Internationale Zusammenarbeit (GIZ) GmbH on behalf of the German Federal Ministry for the Environment, Nature Conservation, Nuclear Safety and Consumer Protection (BMUV) under the International Climate Initiative (IKI) in collaboration with Ministry of Environment, Forest and Climate Change (MoEFCC), Government of India. The content is an adaptation of the CEPA pilot implementation undertaken by Gorakhpur Environmental Action Group (GEAG) in Uttar Pradesh. The views and opinions expressed in this publication do not necessarily represent those of GIZ, MoEFCC, or other partner institutions mentioned.

Photo Credits: GIZ/Yaiphaba Akoijam
GEAG

Contributors: GEAG/Shiraz Wajih & Nivedita Mani
GIZ/Yaiphaba Akoijam & Kirtiman Awasthi

Designed by: GIZ/Mitansh Dawda, Yaiphaba Akoijam & Purva Shah

Responsible: Ravindra Singh, Director
Indo-German Biodiversity Programme, GIZ